अध्याय 13: पतझर में टूटी पत्तियाँ

विषय-सूची — 14 प्रश्नावली · 26 प्रश्न

प्रश्नावली 13.1	मौखिक — भाग I (गिन्नी का सोना)	3 प्रश्न
प्रश्नावली 13.2	मौखिक — भाग II (झेन की देन)	3 प्रश्न
प्रश्नावली 13.3	लिखित (क) — 25-30 शब्द, भाग I	1 प्रश्न
प्रश्नावली 13.4	लिखित (क) — 25-30 शब्द, भाग II	3 प्रश्न
प्रश्नावली 13.5	लिखित (ख) — 50-60 शब्द, भाग I	4 प्रश्न
प्रश्नावली 13.6	लिखित (ख) — 50-60 शब्द, भाग II	2 प्रश्न
प्रश्नावली 13.7	लिखित (ग) — आशय स्पष्ट, भाग I	2 प्रश्न
प्रश्नावली 13.8	लिखित (ग) — आशय स्पष्ट, भाग II	2 प्रश्न
प्रश्नावली 13.9	भाषा अध्ययन — 1. शब्द-प्रयोग	1 प्रश्न
प्रश्नावली 13.10	भाषा अध्ययन — 2. द्वंद्व समास विग्रह	1 प्रश्न
प्रश्नावली 13.11	भाषा अध्ययन — 3. भाववाचक संज्ञा	1 प्रश्न
प्रश्नावली 13.12	भाषा अध्ययन — 4. अनेकार्थी शब्द	1 प्रश्न
प्रश्नावली 13.13	भाषा अध्ययन — 5. संयुक्त वाक्य	1 प्रश्न
प्रश्नावली 13.14	भाषा अध्ययन — 6. मिश्र वाक्य	1 प्रश्न

प्रश्नावली 13.1 — मौखिक — भाग I (गिन्नी का सोना)

प्रश्न 1

शुद्ध सोना और गिन्नी का सोना अलग क्यों होता है?

हल

शुद्ध सोना 24 कैरेट का होता है — उसमें कोई मिलावट नहीं होती।
गिन्नी के सोने में थोड़ा-सा ताँबा मिलाया जाता है, इसलिए वह अधिक चमकता है और शुद्ध सोने से अधिक मज़बूत भी होता है।
यही कारण है कि दोनों की गुणवत्ता और शुद्धता में अंतर होता है।

उत्तर: गिन्नी के सोने में ताँबा मिला होता है, जिससे वह चमकीला व मज़बूत होता है, जबकि शुद्ध सोना बिना मिलावट का 24 कैरेट का होता है।

प्रश्न 2

प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट किसे कहते हैं?

हल

शुद्ध आदर्श, शुद्ध सोने के समान होते हैं।
जो लोग इन शुद्ध आदर्शों में थोड़ी व्यावहारिकता (ताँबे) की मिलावट करके उन्हें व्यावहारिक जीवन में लागू कर दिखाते हैं, उन्हें 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' कहते हैं।

उत्तर: वे लोग जो शुद्ध आदर्शों में व्यावहारिकता का पुट मिलाकर उन्हें जीवन में चलाकर दिखाते हैं, उन्हें 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' कहते हैं।

प्रश्न 3

पाठ के संदर्भ में शुद्ध आदर्श क्या है?

हल

पाठ के संदर्भ में शुद्ध आदर्श वे आदर्श हैं जिनमें किसी प्रकार की व्यावहारिकता की मिलावट न हो।
जैसे शुद्ध सोना 24 कैरेट का होता है, उसी प्रकार शुद्ध आदर्श बिना किसी स्वार्थ या लाभ-हानि की गणना के अपनाए जाते हैं।
ये आदर्श समाज को नैतिक दिशा देते हैं और शाश्वत मूल्यों पर आधारित होते हैं।

उत्तर: शुद्ध आदर्श वे हैं जिनमें किसी प्रकार की व्यावहारिकता की मिलावट न हो — जो लाभ-हानि की परवाह किए बिना अपनाए जाएँ।

प्रश्नावली 13.2 — मौखिक — भाग II (झेन की देन)

प्रश्न 4

लेखक ने जापानियों के दिमाग में 'स्पीड' का इंजन लगने की बात क्यों कही है?

हल

जापानी लोगों ने अमेरिका से प्रतिस्पर्धा करने के लिए अपने काम की रफ़्तार अत्यधिक बढ़ा ली।
एक महीने में पूरा होने वाला काम एक दिन में करने की कोशिश करने लगे।
वैसे भी दिमाग की रफ़्तार हमेशा तेज़ रहती है; उस पर 'स्पीड' का दबाव पड़ने से वह हजार गुना तेज़ दौड़ने लगता है और तनाव से टूट जाता है।
इसीलिए लेखक ने जापानियों के दिमाग में 'स्पीड' का इंजन लगने की बात कही है।

उत्तर: अमेरिका से प्रतिस्पर्धा के कारण जापानियों ने काम की रफ़्तार बेहद बढ़ा ली, जिससे उनका दिमाग 'स्पीड' के इंजन की तरह हजार गुना तेज़ दौड़ने लगता है और मानसिक तनाव उत्पन्न होता है।

प्रश्न 5

जापानी में चाय पीने की विधि को क्या कहते हैं?

हल

जापानी में चाय पीने की विधि को 'चा-नो-यू' कहते हैं।
अंग्रेज़ी में इसे 'टी-सेरेमनी' कहा जाता है।

उत्तर: जापानी में चाय पीने की विधि को 'चा-नो-यू' कहते हैं।

प्रश्न 6

जापान में जहाँ चाय पिलाई जाती है, उस स्थान की क्या विशेषता है?

हल

वह एक छः मंजिली इमारत की छत पर बनी सुंदर पर्णकुटी थी।
उसकी दीवारें दफ़्ती (लकड़ी की खोखली सरकने वाली दीवार) की थीं और ज़मीन तातामी (चटाई) की।
बाहर मिट्टी का एक बेढब-सा बरतन था जिसमें पानी भरा था — अंदर जाने से पहले हाथ-पाँव धोए जाते थे।
वहाँ का वातावरण इतना शांत था कि चायदानी के पानी का खदबदाना भी सुनाई देता था।
तीन से अधिक व्यक्तियों को प्रवेश नहीं दिया जाता था क्योंकि शांति मुख्य बात होती है।

उत्तर: वह छत पर दफ़्ती की दीवारों और तातामी की ज़मीनवाली पर्णकुटी थी — अत्यंत शांत, जहाँ तीन से अधिक आदमियों को प्रवेश नहीं दिया जाता।

प्रश्नावली 13.3 — लिखित (क) — 25-30 शब्द, भाग I

प्रश्न 1

शुद्ध आदर्श की तुलना सोने से और व्यावहारिकता की तुलना ताँबे से क्यों की गई है?

हल

जैसे शुद्ध सोना बहुमूल्य और उच्च गुणवत्ता का होता है, उसी प्रकार शुद्ध आदर्श भी समाज के लिए मूल्यवान और उच्च स्तर के होते हैं।

ताँबा सस्ता और कम कीमती धातु है — व्यावहारिकता भी लाभ-हानि की गणना पर आधारित होने के कारण नीचे के स्तर की होती है।

जब सोने में ताँबा मिलाया जाता है तो गिन्नी का सोना बनता है — उसी प्रकार आदर्श में व्यावहारिकता मिलने से 'प्रैक्टिकल आइडियालिज़्म' बनता है।

उत्तर: शुद्ध सोना जैसे बहुमूल्य और उच्च होता है, वैसे ही शुद्ध आदर्श — और ताँबा जैसे साधारण और कम कीमती, वैसे ही व्यावहारिकता; दोनों की मिलावट 'प्रैक्टिकल आइडियालिज़्म' बनाती है।

प्रश्नावली 13.4 — लिखित (क) — 25-30 शब्द, भाग II

प्रश्न 2

चाजीन ने कौन-सी क्रियाएँ गरिमापूर्ण ढंग से पूरी कीं?

हल

चाजीन ने लेखक और उनके मित्रों को देखकर खड़े होकर कमर झुकाकर प्रणाम किया।
'दो-झो' कहकर स्वागत किया और बैठने की जगह दिखाई।
अँगीठी सुलगाई, उस पर चायदानी रखी, बगल के कमरे से बरतन लाया और तौलिए से उन्हें साफ़ किया।
सभी क्रियाएँ इतनी गरिमापूर्ण थीं कि हर भंगिमा से जयजयवंती के सुर गूँजते प्रतीत होते थे।

उत्तर: चाजीन ने प्रणाम करना, स्वागत करना, अँगीठी सुलगाना, चायदानी रखना, बरतन साफ़ करना और चाय परोसना — सभी क्रियाएँ गरिमापूर्ण ढंग से कीं।

प्रश्न 3

'टी-सेरेमनी' में कितने आदमियों को प्रवेश दिया जाता था और क्यों?

हल

'टी-सेरेमनी' में तीन से अधिक आदमियों को प्रवेश नहीं दिया जाता था।
इस विधि में शांति मुख्य बात होती है और अधिक लोगों के आने से शांति भंग हो सकती है।
प्याले में दो घूँट से अधिक चाय नहीं होती और एक-एक बूँद चाय चुसकी लेकर पी जाती है, जिसके लिए शांत वातावरण आवश्यक है।

उत्तर: 'टी-सेरेमनी' में तीन से अधिक आदमियों को प्रवेश नहीं दिया जाता था, क्योंकि इस विधि में शांति सर्वोपरि है और अधिक लोगों से शांति भंग होती है।

प्रश्न 4

चाय पीने के बाद लेखक ने स्वयं में क्या परिवर्तन महसूस किया?

हल

पहले दस-पंद्रह मिनट लेखक उलझन में पड़े रहे।
फिर धीरे-धीरे उनके दिमाग की रफ़्तार धीमी पड़ती गई और अंततः बिल्कुल बंद हो गई।
उन्हें लगा मानो वे अनंतकाल में जी रहे हैं।
उनके दिमाग से भूत और भविष्य दोनों काल उड़ गए और केवल वर्तमान क्षण सामने रह गया जो अनंतकाल जितना विस्तृत था।
यहाँ तक कि उन्हें सन्नाटा भी सुनाई देने लगा।

उत्तर: चाय पीने के बाद लेखक के दिमाग की रफ़्तार धीमी होकर बंद हो गई, भूत-भविष्य दोनों काल उड़ गए और केवल वर्तमान क्षण रहा — उन्हें अनंतकाल में जीने का अनुभव हुआ।

प्रश्नावली 13.5 — लिखित (ख) — 50-60 शब्द, भाग I

प्रश्न 1

गांधीजी में नेतृत्व की अद्भुत क्षमता थी; उदाहरण सहित इस बात की पुष्टि कीजिए।

हल

गांधीजी केवल आदर्शवादी नहीं थे — वे व्यावहारिकता को भी पहचानते थे।
परंतु उन्होंने कभी आदर्शों को व्यावहारिकता के स्तर पर नहीं उतरने दिया; बल्कि व्यावहारिकता को आदर्शों के स्तर पर चढ़ाया।
वे सोने में ताँबा नहीं, बल्कि ताँबे में सोना मिलाकर उसकी कीमत बढ़ाते थे।
उदाहरण: अहिंसा और सत्याग्रह जैसे शुद्ध आदर्शों को उन्होंने व्यावहारिक आंदोलनों (नमक सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन) के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाया।
इसी नेतृत्व-क्षमता के कारण देश उनके पीछे चला और आज़ादी मिली।

उत्तर: गांधीजी आदर्शों को व्यावहारिकता के स्तर पर नहीं उतरने देते थे, बल्कि व्यावहारिकता को आदर्शों के स्तर पर ले जाते थे। जैसे ताँबे में थोड़ा सोना मिलाने पर आभूषण व्यावहारिक बनता है, वैसे ही वे शुद्ध आदर्शों को व्यावहारिक रूप देने में सक्षम थे।

प्रश्न 2

आपके विचार से कौन-से ऐसे मूल्य हैं जो शाश्वत हैं? वर्तमान समय में इन मूल्यों की प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए।

हल

शाश्वत मूल्य वे होते हैं जो सदैव एक-से रहते हैं और समय के साथ बदलते नहीं।
सत्य, अहिंसा, करुणा, ईमानदारी, परोपकार, न्याय — ये सभी शाश्वत मूल्य हैं।
वर्तमान समय में जब चारों ओर भ्रष्टाचार, हिंसा और स्वार्थ बढ़ रहा है, तब इन मूल्यों की प्रासंगिकता और भी अधिक हो गई है।
ये मूल्य समाज को जोड़ते हैं, आपसी विश्वास बनाते हैं और मानवीय गरिमा को बनाए रखते हैं।
आदर्शवादी लोगों ने ही समाज को ये शाश्वत मूल्य दिए हैं।

उत्तर: सत्य, अहिंसा, करुणा, ईमानदारी और परोपकार जैसे मूल्य शाश्वत हैं। वर्तमान में भ्रष्टाचार और स्वार्थ के बीच इन मूल्यों की प्रासंगिकता और बढ़ गई है — ये समाज को जोड़ते और मानवीय गरिमा बनाए रखते हैं।

प्रश्न 3

'शुद्ध सोने में ताँबे की मिलावट या ताँबे में सोना', गांधीजी के आदर्श और व्यवहार के संदर्भ में यह बात किस तरह झलकती है? स्पष्ट कीजिए।

हल

कुछ लोग शुद्ध सोने (आदर्श) में ताँबा (व्यावहारिकता) मिलाते हैं — अर्थात आदर्शों को कम करके व्यावहारिकता को बढ़ावा देते हैं। इससे आदर्श पीछे हट जाते हैं।

परंतु गांधीजी इसके विपरीत ताँबे (व्यावहारिकता) में सोना (आदर्श) मिलाते थे — अर्थात व्यावहारिक साधनों को आदर्शों के स्तर तक ऊँचा उठाते थे।

सत्याग्रह, असहयोग, नमक आंदोलन — ये व्यावहारिक कदम थे, किंतु इनके पीछे सत्य और अहिंसा के शुद्ध आदर्श थे।

इसीलिए गांधीजी के जीवन में सोना (आदर्श) हमेशा आगे रहता था।

उत्तर: गांधीजी आदर्शों को व्यावहारिकता के नीचे नहीं उतरने देते थे बल्कि व्यावहारिकता को आदर्शों तक ऊँचा उठाते थे — ताँबे में सोना मिलाने की तरह — इसीलिए उनके जीवन में सोना (आदर्श) सदा आगे रहता था।

प्रश्न 4

'गिरगिट' कहानी में आपने समाज में व्याप्त अवसरानुसार अपने व्यवहार को पल-पल में बदल डालने की एक बानगी देखी। इस पाठ के अंश 'गिन्नी का सोना' के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए कि 'आदर्शवादिता' और 'व्यावहारिकता' इनमें से जीवन में किसका महत्त्व है?

हल

'गिरगिट' कहानी में मुख्य पात्र अवसर के अनुसार अपना व्यवहार और निर्णय बदलता रहता है — यह शुद्ध व्यावहारिकता का उदाहरण है।

'गिन्नी का सोना' यह स्पष्ट करता है कि व्यवहारवादी लोग सफल होते हैं, आगे भी जाते हैं, परंतु समाज को ऊपर नहीं ले जाते।

आदर्शवादी लोग खुद ऊपर चढ़ते हैं और दूसरों को भी ऊपर ले चलते हैं।

समाज के पास जो शाश्वत मूल्य हैं, वे आदर्शवादियों का दिया हुआ है — व्यवहारवादियों ने तो समाज को गिराया ही है।

अतः जीवन में 'आदर्शवादिता' का महत्त्व अधिक है, क्योंकि यही समाज को स्थायी रूप से ऊँचा उठाती है।

उत्तर: जीवन में आदर्शवादिता का महत्त्व अधिक है। व्यवहारवादी लोग सफल भले हों, परंतु समाज को शाश्वत मूल्य आदर्शवादियों ने दिए हैं। 'गिरगिट' जैसी व्यावहारिकता समाज को गिराती है, जबकि आदर्शवादिता उठाती है।

प्रश्नावली 13.6 — लिखित (ख) — 50-60 शब्द, भाग II

प्रश्न 6

लेखक के मित्र ने मानसिक रोग के क्या-क्या कारण बताए? आप इन कारणों से कहाँ तक सहमत हैं?

हल

लेखक के जापानी मित्र ने मानसिक रोग के निम्न कारण बताए:

1. जीवन की रफ़्तार बहुत बढ़ गई है — लोग चलते नहीं, दौड़ते हैं; बोलते नहीं, बकते हैं।
2. अकेले में भी लोग अपने आप से लगातार बड़बड़ाते रहते हैं।
3. अमेरिका से प्रतिस्पर्धा के कारण एक महीने का काम एक दिन में करने की कोशिश होती है।
4. दिमाग पर 'स्पीड' का दबाव पड़ने से वह तनाव से टूट जाता है।

ये कारण काफ़ी हद तक सहमत करने योग्य हैं। आज भारत में भी यही समस्या बढ़ रही है — कॉर्पोरेट जगत में काम का बोझ, सोशल मीडिया की लत और प्रतिस्पर्धा के कारण युवा मानसिक तनाव से पीड़ित हो रहे हैं।

उत्तर: मित्र ने कारण बताए: जीवन की तेज़ रफ़्तार, अकेले में बड़बड़ाना, अमेरिका से प्रतिस्पर्धा और दिमाग पर 'स्पीड' का दबाव। ये कारण आज भी प्रासंगिक हैं — भारत में भी युवा इसी तनाव से पीड़ित हो रहे हैं।

प्रश्न 7

लेखक के अनुसार सत्य केवल वर्तमान है, उसी में जीना चाहिए। लेखक ने ऐसा क्यों कहा होगा? स्पष्ट कीजिए।

हल

लेखक ने 'टी-सेरेमनी' के अनुभव के आधार पर कहा कि भूतकाल और भविष्यकाल दोनों मिथ्या हैं।

भूतकाल जा चुका है और भविष्यकाल अभी आया नहीं — हमारे सामने जो वर्तमान क्षण है, वही सत्य है।

हम अकसर गुज़रे दिनों की यादों में उलझे रहते हैं या भविष्य के सपनों में खोए रहते हैं और वर्तमान को जीना भूल जाते हैं।

चाय पीते-पीते लेखक ने अनुभव किया कि जब केवल वर्तमान क्षण में जीते हैं तो मन शांत होता है और वह क्षण अनंतकाल जितना विस्तृत लगता है।

इसीलिए लेखक ने कहा कि वर्तमान में जीना ही सच्चा जीना है।

उत्तर: भूत जा चुका और भविष्य अभी आया नहीं — दोनों मिथ्या हैं। केवल वर्तमान क्षण सत्य है। 'टी-सेरेमनी' में लेखक ने यही अनुभव किया कि वर्तमान में जीने पर मन शांत होता है और जीवन का सच्चा अर्थ मिलता है।

प्रश्नावली 13.7 — लिखित (ग) — आशय स्पष्ट, भाग I

प्रश्न 1

समाज के पास अगर शाश्वत मूल्यों जैसा कुछ है तो वह आदर्शवादी लोगों का ही दिया हुआ है।

हल

इस कथन का आशय यह है कि समाज में जो स्थायी और शाश्वत मूल्य — जैसे सत्य, न्याय, करुणा, परोपकार — देखे जाते हैं, वे व्यवहारवादियों की देन नहीं हैं।
व्यवहारवादी लोग केवल अपने लाभ-हानि का हिसाब लगाकर जीते हैं — वे समाज को ऊपर नहीं ले जाते।
आदर्शवादी लोग स्वयं ऊपर चढ़ते हैं और दूसरों को भी ऊपर ले चलते हैं — उन्होंने ही समाज को नैतिकता, न्याय और मानवीयता की विरासत दी है।
गांधीजी, बुद्ध, विवेकानंद जैसे आदर्शवादियों ने जो मूल्य दिए, वे आज भी समाज का मार्गदर्शन करते हैं।

उत्तर: आशय: समाज में जो शाश्वत मूल्य (सत्य, न्याय, करुणा) हैं, वे आदर्शवादियों की देन हैं। व्यवहारवादी अपने लाभ तक सीमित रहते हैं, जबकि आदर्शवादी समाज को स्थायी नैतिक विरासत देते हैं।

प्रश्न 2

जब व्यावहारिकता का बखान होने लगता है तब 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्टों' के जीवन से आदर्श धीरे-धीरे पीछे हटने लगते हैं और उनकी व्यावहारिक सूझ-बूझ ही आगे आने लगती है।

हल

इस कथन का आशय यह है कि जो लोग आदर्शों में व्यावहारिकता का मिश्रण करके 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' बनते हैं, वे शुरू में तो आदर्शों को साथ लेकर चलते हैं।
परंतु जब समाज उनकी व्यावहारिकता की तारीफ़ करने लगता है, तो वे धीरे-धीरे आदर्शों को छोड़कर केवल व्यावहारिकता को ही अपनाने लगते हैं।
जैसे गिन्नी के सोने में ताँबा आगे आ जाता है और सोना पीछे चला जाता है, उसी प्रकार इनके जीवन से आदर्श हट जाते हैं।
अंततः ऐसे लोग 'प्रैक्टिकल' तो रहते हैं, किंतु 'आइडियालिस्ट' नहीं।

उत्तर: आशय: व्यावहारिकता की प्रशंसा होने पर 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' धीरे-धीरे आदर्शों को छोड़ देते हैं और केवल व्यावहारिकता ही बचती है — जैसे गिन्नी के सोने में ताँबा आगे आ जाता है और सोना पीछे छूट जाता है।

प्रश्नावली 13.8 — लिखित (ग) — आशय स्पष्ट, भाग II

प्रश्न 3

हमारे जीवन की रफ़्तार बढ़ गई है। यहाँ कोई चलता नहीं बल्कि दौड़ता है। कोई बोलता नहीं, बकता है। हम जब अकेले पड़ते हैं तब अपने आपसे लगातार बड़बड़ाते रहते हैं।

हल

इस कथन का आशय है कि आधुनिक जीवन में प्रतिस्पर्धा और भागदौड़ इतनी बढ़ गई है कि लोग सामान्य गति से जीना भूल गए हैं।
'चलने' और 'दौड़ने' का भेद यह है कि चलना सहज और शांत गति है, दौड़ना आतुरता और बेचैनी की गति।
'बोलना' सोच-समझकर बात करना है, 'बकना' अनावश्यक और अव्यवस्थित बातें करना है।
अकेले में बड़बड़ाना यह दर्शाता है कि दिमाग कभी शांत नहीं रहता — वह निरंतर किसी न किसी विचार में उलझा रहता है।
यह मानसिक अशांति का प्रतीक है जो आधुनिक जीवनशैली की देन है।

उत्तर: आशय: आधुनिक जीवन की भागदौड़ में लोग सहजता खो चुके हैं — चलने की जगह दौड़ रहे हैं, बोलने की जगह बकते हैं और अकेले में भी दिमाग नहीं रुकता। यह मानसिक अशांति और तनाव का प्रतीक है।

प्रश्न 4

सभी क्रियाएँ इतनी गरिमापूर्ण ढंग से कीं कि उसकी हर भंगिमा से लगता था मानो जयजयवंती के सुर गूँज रहे हों।

हल

इस कथन का आशय है कि चाजीन ने 'टी-सेरेमनी' की प्रत्येक क्रिया — स्वागत करना, अँगीठी सुलगाना, बरतन साफ़ करना, चाय बनाना और परोसना — इतने सलीके और गरिमा के साथ की।
जयजयवंती एक राग का नाम है जो शांत, गंभीर और मधुर होता है।
चाजीन की हर भंगिमा इतनी सुंदर और लयबद्ध थी मानो कोई संगीत की लय में काम कर रहा हो।
इस उपमा से लेखक ने यह दर्शाया कि उस शांत वातावरण में चाजीन की क्रियाएँ एक प्रकार की संगीतमय साधना थीं।

उत्तर: आशय: चाजीन ने 'टी-सेरेमनी' की हर क्रिया इतनी गरिमा और लय के साथ की कि वे जयजयवंती राग की तरह शांत और सुरमयी प्रतीत हुईं — यह उसकी कार्य-साधना की सुंदरता का वर्णन है।

प्रश्नावली 13.9 — भाषा अध्ययन — 1. शब्द-प्रयोग

प्रश्न 1

नीचे दिए गए शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए— व्यावहारिकता, आदर्श, सूझबूझ, विलक्षण, शाश्वत

हल

व्यावहारिकता: जीवन में व्यावहारिकता का होना ज़रूरी है, परंतु उसे आदर्शों पर हावी नहीं होने देना चाहिए।
आदर्श: गांधीजी के आदर्श आज भी हमें प्रेरित करते हैं।
सूझबूझ: संकट के समय उसने अपनी सूझबूझ से सही निर्णय लिया।
विलक्षण: वह बच्चा गणित में विलक्षण प्रतिभा का धनी था।
शाश्वत: सत्य और न्याय शाश्वत मूल्य हैं जो कभी नहीं बदलते।

उत्तर: व्यावहारिकता — आदर्शों पर व्यावहारिकता हावी नहीं होनी चाहिए। आदर्श — गांधीजी के आदर्श प्रेरणादायी हैं। सूझबूझ — संकट में सूझबूझ ज़रूरी है। विलक्षण — वह विलक्षण प्रतिभा का बालक था। शाश्वत — सत्य शाश्वत है।

प्रश्नावली 13.10 — भाषा अध्ययन — 2. द्वंद्व समास विग्रह

प्रश्न 2

नीचे दिए गए द्वंद्व समास का विग्रह कीजिए— (क) माता-पिता (ख) पाप-पुण्य (ग) सुख-दुख (घ) रात-दिन (ङ) अन्न-जल (च) घर-बाहर (छ) देश-विदेश

हल

(क) माता-पिता = माता और पिता
(ख) पाप-पुण्य = पाप और पुण्य
(ग) सुख-दुख = सुख और दुख
(घ) रात-दिन = रात और दिन
(ङ) अन्न-जल = अन्न और जल
(च) घर-बाहर = घर और बाहर
(छ) देश-विदेश = देश और विदेश

उत्तर: सभी द्वंद्व समासों के बीच 'और' जोड़कर विग्रह होता है — माता और पिता; पाप और पुण्य; सुख और दुख; रात और दिन; अन्न और जल; घर और बाहर; देश और विदेश।

प्रश्नावली 13.11 — भाषा अध्ययन — 3. भाववाचक संज्ञा

प्रश्न 3

नीचे दिए गए विशेषण शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए— (क) सफल (ख) विलक्षण (ग) व्यावहारिक (घ) सजग (ङ) आदर्शवादी (च) शुद्ध

हल

(क) सफल → सफलता
(ख) विलक्षण → विलक्षणता
(ग) व्यावहारिक → व्यावहारिकता
(घ) सजग → सजगता
(ङ) आदर्शवादी → आदर्शवादिता
(च) शुद्ध → शुद्धता

उत्तर: सफल→सफलता; विलक्षण→विलक्षणता; व्यावहारिक→व्यावहारिकता; सजग→सजगता; आदर्शवादी→आदर्शवादिता; शुद्ध→शुद्धता।

प्रश्नावली 13.12 — भाषा अध्ययन — 4. अनेकार्थी शब्द

प्रश्न 4

नीचे दिए गए शब्दों के भिन्न-भिन्न अर्थ स्पष्ट करने के लिए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए— उत्तर, कर, अंक, नग

हल

उत्तर:
(i) दिशा: सूर्य पूर्व में उगता है और उत्तर दिशा में ध्रुव तारा है।
(ii) जवाब: परीक्षा में सभी प्रश्नों का उत्तर देना आवश्यक है।
कर:
(i) हाथ: उसने अपने कर से आशीर्वाद दिया।
(ii) टैक्स: सरकार ने नए कर लगाने की घोषणा की।
अंक:
(i) संख्या/नंबर: उसने परीक्षा में नब्बे अंक प्राप्त किए।
(ii) नाटक का अंक: इस नाटक में तीन अंक हैं।
(iii) गोद: माता ने बच्चे को अंक में ले लिया।
नग:
(i) पहाड़: हिमालय एक विशाल नग है।
(ii) रत्न/नगीना: अँगूठी में एक सुंदर नग जड़ा है।

उत्तर: उत्तर = दिशा / जवाब; कर = हाथ / टैक्स; अंक = नंबर / नाटक का भाग / गोद; नग = पहाड़ / रत्न।

प्रश्नावली 13.13 — भाषा अध्ययन — 5. संयुक्त वाक्य

प्रश्न 5

नीचे दिए गए वाक्यों को संयुक्त वाक्य में बदलकर लिखिए— (क) 1. अँगीठी सुलगायी। 2. उस पर चायदानी रखी। (ख) 1. चाय तैयार हुई। 2. उसने वह प्यालों में भरी। (ग) 1. बगल के कमरे में जाकर कुछ बरतन ले आया। 2. तौलिए से बरतन साफ़ किए।

हल

(क) अँगीठी सुलगायी और उस पर चायदानी रखी।
(ख) चाय तैयार हुई और उसने वह प्यालों में भरी।
(ग) बगल के कमरे में जाकर कुछ बरतन ले आया और तौलिए से बरतन साफ़ किए।

उत्तर: (क) अँगीठी सुलगायी और उस पर चायदानी रखी। (ख) चाय तैयार हुई और उसने वह प्यालों में भरी। (ग) बगल के कमरे से बरतन ले आया और तौलिए से साफ़ किए।

प्रश्नावली 13.14 — भाषा अध्ययन — 6. मिश्र वाक्य

प्रश्न 6

नीचे दिए गए वाक्यों से मिश्र वाक्य बनाइए— (क) 1. चाय पीने की यह एक विधि है। 2. जापानी में उसे चा-नो-यू कहते हैं। (ख) 1. बाहर बेढब-सा एक मिट्टी का बरतन था। 2. उसमें पानी भरा हुआ था। (ग) 1. चाय तैयार हुई। 2. उसने वह प्यालों में भरी। 3. फिर वे प्याले हमारे सामने रख दिए गए।

हल

(क) जापानी में जिसे चा-नो-यू कहते हैं, वह चाय पीने की एक विधि है।
(ख) बाहर बेढब-सा एक मिट्टी का बरतन था जिसमें पानी भरा हुआ था।
(ग) जब चाय तैयार हुई तब उसने वह प्यालों में भरी और फिर वे प्याले हमारे सामने रख दिए गए।

उत्तर: (क) जापानी में जिसे चा-नो-यू कहते हैं, वह चाय पीने की एक विधि है। (ख) बाहर एक मिट्टी का बरतन था जिसमें पानी भरा था। (ग) जब चाय तैयार हुई तब प्यालों में भरकर सामने रख दी गई।